B.Ed → 1st Year

Paper → Gender School and Socity

* सामाजिक परिवर्तन के प्रतिनिधि के रूप में शिक्षक :-

किसी भी औपचारिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक केन्द्रीय बिन्दु है। शिक्षक पारम्परिक संस्कृति का वाहक तथा सामाजिक परिवर्तन का प्रतिनिधि माना जाता है। उसे इन दोनों कार्यों को करना होता है। सामाजिक परिवर्तन का कारण एक ऐसे समाज में शिक्षक महत्वपूर्ण है जैसे औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, संस्कृतिकरण, धर्मनिरपेक्षवाद, विज्ञानवाद आदि अनेक तत्वों के कारण तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है।

प्राचीन भारत में शिक्षक ही सामाजिक परिवर्तन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। जब कोई शिक्षक उचित सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव करता था तब वह शिक्षण की स्थापना कर उसके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाता था। धीरे धीरे शिक्षक का स्वरूप क्षीण होता गया तथा अंग्रेजी शासन काल आते-आते वह एक उपेक्षित वर्ग के रूप स्थापित हो गया। आज स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी उसकी स्थिति में सुधार अपेक्षित है। उसकी सेवाओं को समाज तथा सरकार से मान्यता प्राप्त होनी चाहिए जिससे उसे सामाजिक मान्यता प्राप्त करने हेतु प्रयास न करना पड़े।

सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में समस्त

आशा करता है कि शिक्षक को सामाजिक परिवर्तन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना चाहिए। शिक्षक की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं—

* सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया की गति में तीव्रता लाने के लिए शिक्षक की भूमिका में पुनर्निर्माण की आवश्यकता है।
* शिक्षक को लोकतांत्रिक मार्ग स्वीकार करना चाहिए।
* सांस्कृतिक और बौद्धिक स्तरों पर शिक्षकों को अधिक असमानता वाले समूह के साथ कार्य करना चाहिए।
* शिक्षक को प्रबुद्ध और अशिक्षित दोनों प्रकार के अभिभावकों के साथ कार्य करने की योग्यता होनी चाहिए।
* कुछ बालक प्रतिभावान होते हुए भी सामाजिक आर्थिक भिन्नता के कारण वे अन्य बालकों के साथ रहने में असफल होते हैं उन्हें शिक्षकों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
* शिक्षक को बालकों के सामाजिक स्थितियों के कारण उत्पन्न ऊँच नीच के मानसिक भावना-ग्रंथियों को हतोत्साहित करना चाहिए।
* आधुनिक प्रवृत्तियों को अपनी सीमा के अन्तर्गत रखने के लिए पाठ्य विषयों आवश्यक परिवर्तन करना चाहिए।
* शिक्षकों को बालकों को सदा पढ़ने के लिए प्रोत्साहित

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

करना चाहिए। शिक्षकों को शिक्षण के सभी प्रकार का सदुपयोग करना चाहिए।

* सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षकों को कक्षा की सीमा के बाहर भी शिक्षण कार्य करना चाहिए।

* शिक्षकों को अनुशासन की रक्षा दण्ड के द्वारा न करके बाद विवाद और प्रोत्साहन के अनुशासन की रक्षा करनी चाहिए।

* पाठ्येतर क्रियाओं से शिक्षकों को बालकों का केवल निर्देशन न करके उसमें भाग लेना चाहिए।

* शिक्षक को आधुनिक मूल्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक विशिष्ट वातावरण की रचना करके सुगमतापूर्वक सामाजिक परिवर्तन में योगदान दे सकता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner